International Journal of Humanities and Arts

ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.53
IJHA 2025; 7(2): 180-184
www.humanitiesjournals.net
Received: 24-05-2025
Accepted: 30-06-2025

प्रभात वर्मा
शोधार्थी, किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ रश्मि शर्मा
शोध-निर्देशिका, एसो. प्रोफेसर, किशोरी रमण महिला महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रभात वर्मा
शोधार्थी, किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

मथुरा की गुप्तकालीन प्रतिमाएं

प्रभात वर्मा, डॉ रश्मि शर्मा

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26647699.2025.v7.i2c.211

सारांश
भारत में कई स्थान हैं जहां मूर्तिकला का कार्य बहुत ही उन्नत किस्म का हुआ है। मथुरा मूर्तिकला के इतिहास में गुप्तकाल की मूर्तियों का एक विशेष स्थान है। गुप्त शासकों द्वारा मथुरा नगर में किया गया मूर्ति कला का कार्य-तकनीकी व प्रयुक्त सामग्री के लिए भी विशिष्ट है। मथुरा में मूर्तियों के लिए आस-पास की खदानों से निकलने वाले लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है। गुप्तकाल में बुद्ध, विष्णु, शिव व जैन की प्रतिमाओं में अनेक प्रयोग भी किए गए हैं। जिसमें से कुछ प्रमुख मुद्राएं हैं -अभय मुद्रा, ध्यान मुद्रा, व भूमिस्पर्श मुद्रा। इन मुद्राओं का अपना एक विशेष प्रयोजन था कि किस मुद्रा का क्या अर्थ है । गुप्त काल में प्रतिमाओं के वस्त्रों में भी नए प्रयोग हुए जिसमें मथुरा क्षेत्र में झीने व हल्के वस्त्रों का प्रयोग शामिल है। गुप्तकाल में बौद्ध, जैन व हिन्दू प्रतिमाओं का उत्कृष्ट कार्य करा गया ।

कूटशब्द : प्रभा मण्डल, किरीट, कौस्तुभ, ऊष्णीष,समभंग,त्रिभंग

प्रस्तावना
मथुरा में गुप्त काल में बनी मूर्तियां भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गुप्त काल लगभग 4वीं शताब्दी ई. से 6वीं शताब्दी ई. तक अबाध रूप से चलता रहा। इसी कारण गुप्तकाल को "भारतीय कला का स्वर्ण युग" माना जाता है तथा मथुरा को उस समय का एक महत्वपूर्ण कला केंद्र माना जाता था। मथुरा जैन धर्म के दोनो मुख्य संप्रदायों — दिगंबर और श्वेतांबर — के लिए भी एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। गुप्त सम्राटों ने धार्मिक सहिष्णुता को अपनाया, जिसके कारण हिन्दू धर्म के साथ ही जैन धर्म की मूर्तिकला को भी विकसित होने का मौका मिला। मथुरा की गुप्तकालीन मूर्तियों की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

धार्मिक भिन्नता
मथुरा में गुप्तकालीन युग के प्रतीकों में हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों की छवि देखी जाती है। जिस कारण यहां से विष्णु, शिव, दुर्गा, बुद्ध और तीर्थंकरों की कई मूर्तियाँ मिली हैं।

कला रूप
गुप्त काल की मूर्तियां बहुत ही कोमल, संतुलित और आध्यात्मिक भावनाओं से भरी पायी गई हैं। इन गुप्तकालीन प्रतिमाओं में शारीरिक सुंदरता, वस्त्रों की स्पष्टता, और चेहरे के शांत भाव विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं। मथुरा में गुप्त काल में ही "त्रिभंग मुद्रा" और "समभंग मुद्रा" का अद्भुत उपयोग किया गया।

वस्त्राभूषण एवं सजावट: गुप्त काल में प्रतिमाओं के वस्त्र बारीक और पारदर्शी दर्शाए गए हैं, जिससे शरीर की संरचना दिखाई देती है। अलंकरण सीमित रहे, परंतु सूक्ष्म और कलात्मक थे।

प्रसिद्ध मूर्तियां

1. बुद्ध की पद्मासन मुद्रा में आकृतियाँ, जिनमें साधना की अवस्था और आंतरिक शांति साफ दिखाई देती है। बुद्ध की बैठी हुई प्रतिमाएं (ध्यान मुद्रा में, हाथों की भाव-भंगिमा "ध्यानमुद्रा" में)
2. विष्णु की चार भुजाओं वाली मूर्ति, जिसमें शंख, चक्र, गदा और कमल एक साथ चारों भुजाओं में होते हैं।
3. लक्ष्मी-नारायण की संयुक्त प्रतिमा – सामाजिक और धार्मिक समन्वय को दर्शाती है।
4. त्रिमूर्ति और लिंग मूर्तियां, जो शिव की आराधना से जुड़ी हैं।

प्रभाव और धरोहर

मथुरा की ही यह गुप्तकालीन कला बाद में मध्यकालीन भारतीय मंदिर निर्माण का आधार बनी। इसके साथ ही साथ अजंता की चित्रकला और सांची जैसे स्थलों की शिल्पकला पर भी इसका भरपूर प्रभाव दिखाई देता है।

गुप्त काल की मूर्तिकला के लक्षण

- **आदर्शवाद और सौंदर्य** - प्रतिमाओं में मानव सौंदर्य, भावनाओं का मिश्रण और शांति का आकर्षक समन्वय दिखाई देता है।
- **धार्मिक सामग्री** - बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्म की आकृतियाँ प्रमुखता रखती थीं। विष्णु, शिव, लक्ष्मी, बुद्ध, तीर्थंकर जैसे देवताओं की आकृतियाँ बनाई गईं।
- **उत्कृष्ट भाव-भंगिमा** - प्रतिमाओं के मुख पर शांत, गंभीर और दिव्य भाव प्रकट होते हैं, जैसे "रहस्यमयी हंसी" (हल्की मुस्कान)। विष्णु मूर्तियों में चेहरे पर गंभीरता, करुणा और दिव्यता का भाव साफ नजर आता है।
- **तकनीकी कौशल** - शारीरिक संरचना, कपड़ों की पारदर्शिता, सलवटें और सजावट को बहुत सूक्ष्मता से दर्शाया गया है।
- **गुलाबी बलुआ पत्थर** - मथुरा की प्रतिमाएँ अक्सर गुलाबी बलुआ पत्थर से बनाई जाती थीं, जिससे उन्हें एक खास चमक और सुंदरता मिलती थी।
- **चार भुजाएँ** - विष्णु की मूर्ति में चार भुजाएँ होती हैं, जिनमें उनके प्रमुख शस्त्र – शंख, चक्र, गदा और पद्म – प्रस्तुत किए जाते हैं।
- **वैष्णव प्रतीक** - प्रतिमा में किरीट, कौस्तुभ मणि, यज्ञोपवीत, और गरुड़ जैसे वैष्णव प्रतीकों को प्रस्तुत किया गया है।
- **स्थिर मुद्रा** - अधिकतर प्रतिमाएँ समभंग या त्रिभंग स्थितियों में होती हैं, जिससे दिव्यता और संतुलन का एहसास होता है।
- **आभूषण और वस्त्र** - मूर्तियों को सुंदर आभूषणों और नरम वस्त्रों के साथ प्रदर्शित किया गया है, जो शिल्प की बारीकी को दर्शाता है।

मुख्य गुणधर्म

शिव प्रतिमाओं का स्वरूप

शिव की मूर्तियाँ ज्यादातर गुलाबी बलुआ पत्थर से बनाई जाती थीं, जो मथुरा कला की विशेषता है। यह मूर्तियाँ कठोर और भारी होती थीं, जिनमें स्थायी और शारीरिक ताकत का आभास स्पष्ट होता है।

रूप-प्रकार (आकार और आकृति)

शिव को प्रायः त्रिनेत्रधारी (तीसरी आंख वाले) के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। तथा उनके माथे पर जटाजूट (जटा का समूह) और गंगा का प्रवाह प्रदर्शित किया जाता था।चंद्रमा और नागों को भी उनके शरीर पर स्पष्टता से उकेरा गया है।

आसन एवं मुद्रा

शिव को कभी उत्तान-पद्मासन की ध्यान मुद्रा में तो कभी समभंग मुद्रा में खड़े हुए दिखाया गया है। मूर्तियों में शरीर की मांसलता और यौवन को महत्व दिया गया है, जो उन्हें उत्साही रूप प्रदान करती है।

हथियार और चिह्न

उनके हाथों में त्रिशूल, डमरु, अभय मुद्रा, और वर मुद्रा दिखाई गई हैं। उनके गर्दन पर नाग (सर्प) लिपटा रहता है, जो उनकी शक्ति और मौत पर नियंत्रण का दर्शक है।

पारिवारिक स्वरूप

मथुरा में शिव की पारिवारिक प्रतिमाएँ भी मिली हैं जिनमें उन्हें पार्वती, गणेश और कार्तिकेय के साथ दर्शाया गया है। ये प्रतिमाएँ हिन्दू पारिवारिक जीवन और भक्ति के संस्कार को प्रदर्शित करती हैं।

लिंग स्वरूप

मथुरा से शिवलिंग के स्वरूप में जो मूर्तियाँ मिली हैं उनमे

से कुछ मुखलिंग (मुख वाला लिंग) हैं — ये शिव के चेहरे के साथ लिंग रूप को प्रदर्शित करते हैं।

नंदी का होना

कई मूर्तियों में नंदी बैल जो शिव का वाहन है, को मुख्य रूप से शिव के पास या उनके चरणों में दर्शाया गया है।

बुद्ध की प्रतिमाओं का स्वरूप

मुख और अभिव्यक्ति

इस काल में जो बुद्ध की प्रतिमाए प्राप्त हुई हैं उनमें बुद्ध का चेहरा वृत्ताकार और शांत है, आँखें आधी बंद (अर्द्ध-निमीलित), जो ध्यान की मुद्रा को प्रदर्शित करती हैं तथा चेहरा खुशी से भरा और दयालु नजर आता है, जिसमें शांति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

बालों की साज-सज्जा और ऊष्णीष

सिर पर घुंघराले बाल और ऊपर ज्ञान का प्रतीक ऊष्णीष होता है। माथे पर कभी-कभी उर्णा (आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक) भी प्रदर्शित की गई है।

मुद्रा (हस्तमुद्राएँ)

बुद्ध की मूर्तियों में कई मुद्राएँ प्रकट होती हैं जैसे

1. धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा (धर्म का चक्र चलाना)
2. अभय मुद्रा (निर्भीकता का आश्वासन)
3. ध्यान की मुद्रा (ध्यान में स्थित होना)
4. भूमि स्पर्श मुद्रा (पृथ्वी को गवाह बनाना)

कपड़े और गहने

बुद्ध के शरीर पर एक पारदर्शी वस्त्र (संघाति) होता है, जिससे शरीर की आकृति साफ दिखाई देती है। वस्त्र में सिलवटें अत्यंत बारीकी से बनाई जाती थीं। गुप्तकालीन मूर्तियों में साधु की सरलता प्रमुख होती थी व आभूषणों का उपयोग बहुत कम प्रयोग किया गया है।

बोधिसत्व की प्रतिमाओं का स्वरूप

महायान परंपरा के प्रभाव से बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, मंजुश्री आदि की प्रतिमाएँ भी बननी शुरू हुईं। बोधिसत्व की मूर्तियों में बुद्ध की तुलना में अधिक गहनों और सजावटी तत्वों का उपयोग किया जाता है।

निर्माण और स्तम्भ-भाग

कुछ प्रतिमाएँ बड़े स्तंभों, तोरणों और विहारों के हिस्सों में देखी जा सकती हैं। बौद्ध स्तम्भों पर धर्मचक्र, शंख, हंस और पद्म जैसे चिन्ह उकेरे जाते थे।

शैलीगत विशेषताएँ

मथुरा की गुप्तकालीन बौद्ध प्रतिमाओं में स्थिरता, संतुलन, और आध्यात्मिक गहराई का दर्शन होता है। इन प्रतिमाओं में भावनात्मक गहराई के साथ-साथ आदर्श सुंदरता का प्रदर्शन होता है।

निर्माण सामग्रियाँ

प्रतिमाएँ अक्सर गुलाबी बलुआ पत्थर की बनी होती थीं, जो मथुरा क्षेत्र की पहचान है। शिल्पियों ने आकर्षक, संतुलित और गहरे रेखाओं का इस्तेमाल किया।

तीर्थंकर की प्रतिमाओं का स्वरूप

मुद्रा तथा आसन

तीर्थंकरों को दो मुख्य आसनों में प्रदर्शित किया गया है:

ध्यान मुद्रा में पद्मासन (बैठी हुई ध्यान स्थिति)

खड़गासन (सही खड़ी स्थिति) – विशेष रूप से दिगंबर परंपरा में

दोनों स्वरूपों को शांति, निर्विकारता और ध्यान में डूबा हुआ प्रदर्शित किया गया है।

नग्न स्वरूप (दिगंबर शैली)

ज्यादातर मूर्तियाँ दिगंबर शैली में होती हैं, जिसमें तीर्थंकर बिना वस्त्र के प्रदर्शित किए गए हैं – यह वैराग्य और आत्म-नियंत्रण का संकेत है। शरीर पर कोई आभूषण नहीं होते थे तथा सरलता प्रदर्शित होती है।

पहचान और संकेत (चिन्ह)

हर तीर्थंकर के नीचे उनके लांछन (प्रतीक चिन्ह) की नक्काशी की गई है, जैसे:

ऋषभदेव – उद्योग

पार्श्वनाथ – नाग

महावीर – शेर

सिर के पीछे एक प्रभामंडल (हेलो) और ऊष्णीष (ज्ञान का प्रतीक) प्रदर्शित किया गया है।

कायोत्सर्ग अद्धावस्था

कई प्रतिमाओं में तीर्थंकरों को कायोत्सर्ग मुद्रा (तनाव-मुक्त खड़े होकर ध्यान की अवस्था) में प्रदर्शित किया गया है, जो जैन ध्यान साधना का केंद्रीय प्रतीक है।

यक्ष-यक्षिणी तथा सहायक प्रतिमाओं का स्वरूप

गुप्त काल की जैन मूर्तियों में यक्ष और यक्षिणियों की आकृतियाँ भी पाई जाती हैं, जो तीर्थंकरों के साथ होती हैं। वे ज्यादा सजावटी और आभूषित होते हैं, जिससे तीर्थंकरों की सरलता और भी उभर कर सामने आती है।

मूर्तियों का निर्माण और आधार

जैन मूर्तियों के अंदर दर्ज अभिलेख (प्रशस्तियाँ) भी उपलब्ध हैं, जिन्हें पढ़कर तीर्थंकरों, दानदाताओं और समय की जानकारी प्राप्त होती है। मूर्तियाँ अक्सर मंदिरों, स्तंभों, या चबूतरों में रखी जाती थीं। मूर्तियाँ अधिक नयनाभिराम और यथार्थपरक बनीं। शरीर सौष्ठव (शारीरिक सौंदर्य) और संतुलन का अद्वितीय संयोजन मिलता है।

दिव्यता और आध्यात्मिकता

चेहरों पर शांति, करुणा और आध्यात्मिक गहराई झलकती है।विशेष रूप से बुद्ध और विष्णु की प्रतिमाओं में अलौकिक भाव दिखाई देते हैं।

परिधान और अलंकरण

हल्के और पारदर्शी वस्त्रों का अंकन किया गया है। अलंकरण सजीव और सूक्ष्म हैं, लेकिन अत्यधिक भारी नहीं।

मथुरा शैली और गांधार शैली का समन्वय

गुप्तकाल में मथुरा की कला में गांधार शैली के कुछ प्रभाव भी देखने को मिलते हैं, लेकिन भारतीयता की प्रधानता बनी रही।

मथुरा से प्राप्त गुप्तकालीन निर्मित प्रमुख प्रतिमाओं की सूची

- ध्यानमग्न बुद्ध प्रतिमाएं
  स्थान: मथुरा और सारनाथ

विवरण: बुद्ध पद्मासन में ध्यान मुद्रा में बैठे हैं। चेहरा शांत और दिव्य भावों से युक्त होता है।

विशेषता

पारदर्शी वस्त्र, शरीर रेखाएं स्पष्ट।
बाल छोटे घुँघराले, ऊष्णीष और ध्यान मुद्रा प्रमुख।

विष्णु की चार भुजाओं वाली प्रतिमा

स्थान: मथुरा संग्रहालय
विवरण: विष्णु जी चक्र, शंख, गदा और पद्म धारण किए हुए हैं।

विशेषता

अलंकरण साधारण, किंतु प्रभावशाली।
दिव्य और गंभीर मुद्रा।

लक्ष्मी-नारायण संयुक्त प्रतिमा
स्थान: मथुरा संग्रहालय
विवरण: विष्णु और लक्ष्मी एक साथ खड़े हैं। धार्मिक समन्वय का प्रतीक।

विशेषता:
स्त्री-पुरुष सौंदर्य का संतुलन।
अलंकरण सूक्ष्म और सुरुचिपूर्ण।

- शिव और पार्वती की प्रतिमाएं
  विवरण: शिव को त्रिशूल और डमरू के साथ दर्शाया गया है। पार्वती के साथ सौम्य रूप में।
  विशेषता:
  सजीव भाव-भंगिमाएं, शारीरिक संतुलन।
  भावनात्मक अभिव्यक्ति गहरी।

- **यक्ष-यक्षिणी मूर्तियाँ**
  विवरण: पूर्व की परंपरा से प्रेरित, लेकिन गुप्तकालीन शैली में विकसित।
  विशेषता:
  भव्य कद-काठी, अलंकरण के साथ जीवन्तता।

निष्कर्ष

गुप्तकाल की मथुरा शैली की प्रतिमाएं न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक भावना को प्रकट करती हैं, बल्कि मूर्तिकला की उच्चतम तकनीकी और सौंदर्यबोध की मिसाल भी हैं। प्रतिमाओं में उकेरे गए अलंकरणों से गुप्त काल की विशेष कारिगीरी के बारे में ज्ञात होता है | मथुरा की गुप्तकालीन प्रतिमाएं आज भी भारतीय कला की गौरवशाली धरोहर हैं| इन प्रतिमाओं में जो भावनात्मक गहराई, सौंदर्य और संतुलन देखने को मिलता है, वह भारतीय कला को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। मथुरा की गुप्तकालीन कला का प्रभाव भारत के अन्य कला केंद्रों पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है |

संदर्भ

1. वेदालंकार , हरीदत्त ; प्राचीन भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास, हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ (1972), पृष्ठ सं: 123-168
2. अग्रवाल, वासुदेवशरण ; भारतीय कला (प्रारम्भिक युग से तीसरी शती तक), पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी (1966), पृष्ठ सं 261-341
3. डॉ प्रताप, रीता ; भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (2009), पृष्ठ सं. 481-494
4. डॉ श्रीवास्तव, ए.एल.; प्राचीन भारतीय देव-मूर्तियाँ, संस्कृति विभाग, उ.प्र. शासन, लखनऊ (1998), पृष्ठ सं. 5-8
5. डॉ उपाध्याय, वासुदेव ; प्राचीन भारतीय मूर्ति-विज्ञान, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-1 (1970) पृष्ठ सं. 52-63

6. डॉ श्रीवास्तव, ए.एल. ; भारतीय कला की गांधार शैली | गगननचल अंक 3, जुलाई-सितंबर 1992 , पृष्ठ सं 110, वीणा सीकरी, महानिदेशक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली
7. डॉ कासलीवाल, मीनाक्षी ; भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (2009), पृष्ठ सं. 100 -115